परमात्म ऊर्जा

स्वयं को, सर्व को संतुष्ट करने वाले संतुष्ट मणियां बनो

1. सदा स्वयं को, सर्व को संतुष्ट करने वाले 'संतुष्ट मणियाँ' बनना है। 2. स्वयं के पुरुषार्थ प्रति, सेवा प्रति व संगठन में एक-दो के प्रति सदा विशाल बुद्धि। हद की बुद्धि में नहीं आना। मैं यह चाहती, मेरा तो यह विचार है, यह विशालता नहीं है। जहाँ मैजोरिटी वेरीफाय करते, निमित्त बने हुए वेरीफाय करते, तो यह है - 'विशाल बुद्धि'। जहाँ मैजोरिटी, वहाँ मैं, यह संगठन की शक्ति बढ़ाना। इसमें यह बड़ाई नहीं दिखाओ कि मेरा विचार तो बहुत अच्छा है। भल कितना भी अच्छा हो लेकिन जहाँ संगठन टूटता है, वहाँ अच्छा भी साधारण हो जायेगा। संगठन की शक्ति बढ़ाने की विशालता हो। इसमें कुछ अपना विचार त्यागना भी पड़े तो इस त्याग में ही भाग्य है। यह सदा स्मृति में रखो कि अगर यहाँ संगठन से अलग रहेंगे तो वहाँ विश्व की रॉयल फैमिली में नहीं आयेंगे। अभी का संगठन 21 जन्मों के समीप सम्बन्ध में लायेगा। इसलिए संगठन की शक्ति को बढ़ाना - यह पहला ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ कार्य है। इसमें ही सफलता है। इसलिए इसमें विशाल बुद्धि बनो। बेहद के बनो। सिर्फ अपने तरफ रजाई नहीं खींचो। दूसरे को भी दो तो वह आपको दे देगा। नहीं तो वह भी थोड़ा-थोड़ा देकर फिर पूरा खींच लेगा। 3. तीसरी बात-'प्रसन्नता'।

संतुष्टता और विशालता का प्रत्यक्ष स्वरूप हर ब्राह्मण आत्मा के चेहरे पर, मन पर प्रसन्नता की निशानी दिखाई दे। प्रश्नचित्त नहीं लेकिन प्रसन्नचित्त। चेहरे पर संकल्प और स्वरूप की अविनाशी प्रसन्नता। तो संतुष्टता, विशालता और प्रसन्नता यह है 18 अध्याय की समाप्ति। अब इस रिज़ल्ट की तपस्या करो। एक दो को नहीं देखना यह तो करता नहीं फिर मैं क्यों करूँ, नहीं। मुझे करके दिखाना है। मुझे निमित्त बन वातावरण में वायब्रेशन फैलाना है।

यह तीनों विजय... विजय माला का मणका बनायेगी

इस समय का परिवर्तन बहुत काल के परिवर्तन वाली गोल्डन दुनिया के अधिकारी बनायेगा। यह ईशारा बापदादा ने पहले भी दिया है। स्व की तरफ डबल अन्डर लाइन से अटेन्शन सभी का है! थोड़े समय का अटेन्शन है और बहुत काल के अटेन्शन के फलस्वरूप श्रेष्ठ प्राप्ति की प्रालब्ध है। इसलिए यह थोड़ा समय बहुत श्रेष्ठ सुहावना है। मेहनत भी नहीं है सिर्फ जो बाप ने कहा और धारण किया। और धारण करने से प्रैक्टिकल स्वतः ही होगा। होली हंस का काम ही है- धारणा करना। तो ऐसे होली हंसों की यह सभा है ना! नॉलेजफुल बन गये।

व्यर्थ व साधारण को अच्छी तरह से समझ गये हो। तो समझने के बाद कर्म में स्वतः ही आता है। वैसे भी साधारण भाषा में यही कहते हो ना कि अभी मेरे को समझ में आया। अथवा व्यर्थ क्या है? कभी व्यर्थ या साधारण को ही श्रेष्ठ तो नहीं समझ लेते! इसलिए पहले-पहले मुख्य है -होली हंस बुद्धि। उसमें स्वतः ही परखने की शक्ति आ ही जाती है। क्योंकि व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय तब जाता जब उसकी परख नहीं रहती कि यह राइट है या रांग है। अपने व्यर्थ को, रांग को राइट समझ लेते हैं तब ही ज़्यादा व्यर्थ समय जाता है। है व्यर्थ लेकिन समझते हैं कि मैं समर्थ, राइट सोच रही हूँ। जो मैंने कहा वही राइट है। इसी में परखने की शक्ति न होने के कारण मन की शक्ति, समय की शक्ति, वाणी की शक्ति सब चली जाती है। और दूसरे से मेहनत लेने का बोझ भी चढ़ता है। कारण? क्योंकि होली हंस बुद्धि नहीं बने हैं।

बापदादा सभी होली हंसों को फिर से यही ईशारा दे रहे हैं कि उल्टे को उल्टा नहीं करो। यह है ही उल्टा ये नहीं सोचो लेकिन उल्टे को सुल्टा कैसे करूँ, यह सोचो। इसको कहा जाता है- कल्याण की भावना। श्रेष्ठ भाव, शुभ भावना से अपने व्यर्थ भाव-स्वभाव और दूसरे के भाव-स्वभाव को परिवर्तन करने की विजय प्राप्त करेंगे। समझा! पहले स्व पर विजयी फिर सर्व पर विजयी, फिर प्रकृति पर विजयी बनेंगे। यह तीनों विजय आपको 'विजयी माला' का मणका बनायेगी। प्रकृति में वायुमण्डल, वायब्रेशन या स्थूल प्रकृति की समस्यायें सब आ जाती हैं। तो तीनों पर विजयी हो? इसी आधार से विजय माला का नम्बर अपना देख सकते हो! इसलिए नाम ही 'वैजयन्ती माला' रखा है। तो सभी विजयी हो?

कथा सरिता

प्रेम का बल

शहर की तंग गलियों के बीच एक पुरानी ताले की दुकान थी। लोग वहाँ से ताला-चाबी खरीदते और कभी-कभी चाबी खोने पर डुप्लीकेट चाबी बनवाने भी आते। ताले वाले की दुकान में एक भारी-भरकम हथौड़ा भी था जो कभी-कभार ताले तोड़ने के काम आता था।

हथौड़ा अक्सर सोचा करता कि आखिर इन छोटी-छोटी चाबियों में कौन-सी खूबी है जो इतने मजबूत तालों को भी चुटकियों में खोल देती हैं जबकि मुझे इसके लिए कितने प्रहार करने पड़ते हैं?

एक दिन उससे नहीं रहा गया, और दुकान बंद होने के बाद उसने एक नन्ही चाबी से पूछा, "बहन ये बताओ कि आखिर तुम्हारे अन्दर ऐसी कौन-सी शक्ति है जो तुम इतने ज़िद्दी तालों को भी बड़ी आसानी से खोल देती हो, जबकि मैं इतना बलशाली होते हुए भी ऐसा नहीं कर पाता?"

चाबी मुस्कुराई और बोली, दरअसल, तुम तालों को खोलने के लिए बल का प्रयोग करते हो, उनके ऊपर प्रहार करते हो, और ऐसा करने से ताला खुलता नहीं टूट जाता है जबकि मैं ताले को बिल्कुल भी चोट नहीं पहुंचाती बल्कि मैं तो उसके मन में उतर कर उसके हृदय को स्पर्श करती हूँ और उसके दिल में अपनी जगह बनाती हूँ, इसके बाद जैसे ही मैं उससे खुलने का निवेदन करती हूँ, वह फौरन खुल जाता है।

दोस्तों, मनुष्य जीवन में भी ऐसा ही कुछ होता है। यदि हम किसी को सचमुच जीतना चाहते हैं, अपना बनाना चाहते हैं तो हमें उस व्यक्ति के हृदय में उतरना होगा। जोर-जबरदस्ती से किसी से कोई काम कराना संभव तो है पर इस तरह से हम ताले को खोलते नहीं बल्कि उसे तोड़ देते हैं यानी उस व्यक्ति की उपयोगिता को नष्ट कर देते हैं जबकि प्रेम पूर्वक किसी का दिल जीत कर हम सदा के लिए उसे अपना मित्र बना लेते हैं और उसकी उपयोगिता को कई गुना बढ़ा देते हैं। इस बात को हमेशा याद रखिये- हर एक चीज़ जो बल से प्राप्त की जा सकती है उसे प्रेम से भी पाया जा सकता है लेकिन हर एक जिसे प्रेम से पाया जा सकता है उसे बल से नहीं प्राप्त किया जा सकता।

दिशा हो सही

एक पहलवान जैसा हट्टा-कट्टा, लम्बा-चौड़ा व्यक्ति सामान लेकर किसी स्टेशन पर उतरा। उसने एक टैक्सी वाले से कहा कि मुझे साईं बाबा के मंदिर जाना है। टैक्सी वाले ने कहा, दो सौ रूपये लगेंगे। उस पहलवान आदमी ने बुद्धिमानी दिखाते हुए कहा, इतने पास के दो सौ रूपये, आप टैक्सी वाले तो लूट रहे हो। मैं अपना सामान खुद ही उठा कर चला जाऊंगा।

वह व्यक्ति काफी दूर तक सामान लेकर चलता रहा। कुछ देर बाद पुनः उसे वही टैक्सी वाला दिखा, अब उस आदमी ने फिर टैक्सी वाले से पूछा, भैया अब तो मैंने आधा से ज़्यादा दूरी तय कर ली है तो अब आप कितना रूपये लेंगे?

टैक्सी वाले ने जवाब दिया- चार सौ रुपये।

उस आदमी ने फिर कहा - पहले दो सौ रुपये, अब चार सौ रुपये ऐसा क्यों?

टैक्सी वाले ने जवाब दिया- महोदय, इतनी देर से आप साईं मंदिर की विपरीत दिशा में दौड़ लगा रहे हैं जबकि साईं मंदिर तो दूसरी तरफ है। उस पहलवान व्यक्ति ने कुछ भी नहीं कहा और चुपचाप टैक्सी में बैठ गया।

इसी तरह ज़िंदगी के कई मुकाम में हम किसी चीज़ को बिना गंभीरता से सोचे सीधे काम शुरु कर देते हैं और फिर अपनी मेहनत और समय को बर्बाद कर उस काम को आधा ही करके छोड़ देते हैं। किसी भी काम को हाथ में लेने से पहले पूरी तरह सोच विचार लें कि जो आप कर रहे हैं क्या वो आपके लक्ष्य का हिस्सा है या नहीं।

हमेशा एक बात याद रखें कि दिशा सही होने पर ही मेहनत पूरा रंग लाती है और यदि दिशा ही गलत हो तो आप कितनी भी मेहनत कर लें लेकिन उसका कोई लाभ नहीं मिल पायेगा। इसीलिए दिशा तय करें और आगे बढ़ें, कामयाबी आपके हाथ ज़रूर थामेगी।

इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। बूथ निरीक्षण के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आने पर समूह चित्र में भाजपा के प्रदेश संगठन मंत्री मुरलीधर राव, प्रदेश प्रभारी भगवानदास सबनानी, इंदौर नगर प्रभारी तेज बहादुर सिंह, नगर अध्यक्ष गौरव रणदिवे, पूर्व विधायक सुदर्शन गुप्ता, ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्र.कु. सुजाता दीदी, ब्र.कु. कविता दीदी, पूर्व पार्षद दिवंगत गोपाल मालू के सुपुत्र नितिन मालू, मंडल महामंत्री संदीप दुबे, नगर सुरक्षा समिति के सदस्य महेश चावड़ा तथा अन्य।